गुरु नानक – सबद ६९

सोई मउला जिनि जगु मउलिआ हरिआ कीआ संसारो ॥

रागु सिरिरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २४

सोई मउला जिनि जगु मउलिआ हरिआ कीआ संसारो ॥
आब खाकु जिनि बंधि रहाई धंनु सिरजणहारो ॥१॥
मरणा मुला मरणा ॥
भी करतारहु डरणा ॥१॥ रहाउ ॥
ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नामु खुदाई ॥
जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाई ॥२॥
सोई काजी जिनि आपु तजिआ इकु नामु कीआ आधारो ॥
है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारो ॥३॥
पंज वखत निवाज गुजारहि पड़हि कतेब कुराणा ॥
नानकु आखै गोर सदेई रहिओ पीणा खाणा ॥४॥२८॥

सार: भय और भक्ति साथ नहीं रह सकते। जब किसी चीज़ या व्यक्ति का डर मन में घर कर लेता है तब यह ऐसी बाधाएँ पैदा करता है जो एकता के मिलाप से दूर कर देते हैं । सच्ची भक्ति प्रेम से जन्म लेती है, भय अक्सर अस्तित्व के स्रोत के सार सर्वव्यापी ऊर्जा को गलत समझने से पैदा होता है । जैसे यह विश्वास करना कि निर्माता और उसकी रचना अलग हैं। आध्यात्मिक रूप से जागरूक होने का मतलब है सभी की एकता को पहचानना और बिना किसी डर के इस मिलाप को अपनाना।

सोई मउला जिनि जगु मउलिआ हरिआ कीआ संसारो ॥
असली मालिक सर्वव्यापी शक्ति है जो सृष्टि में खिलने और फलने-फूलने के लिए रचना के रूप में ज़ाहिर होती है।

आब खाकु जिनि बंधि रहाई धंनु सिरजणहारो ॥१॥
यह वही है जिसने पानी और मिट्टी को बाँधकर यह जगत बनाया है। इस सृष्टि के रचयिता की महिमा अद्भुत है। (१)

मरणा मुला मरणा ॥
मृत्यु सभी को आती है; धार्मिक पुजारी इस वास्तविकता का उपदेश देते हैं, लेकिन आंतरिक जागृति के बिना, वे आध्यात्मिक मृत्यु का सामना करते हैं।

भी करतारहु डरणा ॥१॥ रहाउ ॥
क्योंकि वे, सर्वव्यापी शक्ति से डरते और भय पैदा करते हैं जो जीवन और मृत्यु का स्रोत है। (१)(विराम)

ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नामु खुदाई ॥
धर्मज्ञानी या क़ाज़ी न्यायाधीश तब ही कहलाया जाएगा जब आत्म-चिंतन के माध्यम से सृष्टि की एकता का ज्ञानी होगा।

जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाई ॥२॥
बहुत पढ़-लिखकर ज्ञान होने पर भी अगर किसी का आंतरिक मन अहंकार से भरा है तो उसे विद्वान् नहीं माना जा सकता। (२)

सोई काजी जिनि आपु तजिआ इकु नामु कीआ आधारो ॥
क़ाज़ी की उपाधि के वही योग्य हैं जो स्वार्थ और अहंकार को अलग रख, एकता को अपने फ़ैसलों के आधार के रूप में अपनाते हैं।

है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारो ॥३॥
वह अब है, हमेशा रहेगा, कभी नहीं जाएगा। यही सर्वव्यापी शक्ति, सृष्टि के निर्माता की वास्तविकता है। (३)

पंज वखत निवाज गुजारहि पड़हि कतेब कुराणा ॥
कोई दिन में पाँच वक़्त नमाज़ पढ़े और क़ुरान (पवित्र पुराणों) का पाठ करे।

नानकु आखै गोर सदेई रहिओ पीणा खाणा ॥४॥२८॥
नानक कहते हैं कि जब मौत आएगी और क़ब्र बुलाएगी तब सारे दिखावे और सुख-विलास बेकार हो जाएँगे। (४)(२८)

तत्त्व: गुरु नानक हमें हमारी नश्वरता की याद दिलाते हैं और हमें मृत्यु की अनिवार्यता के प्रति सजग रहने का आग्रह करते हैं। वह इस संदेश के द्वारा सतही दिखावे की धार्मिक रस्मों या सांसारिक अभिमान से विचलित होने के बजाय विनम्रता, आत्म-चिंतन और सच्ची भक्ति करने का आह्वान करते हैं। दुनयावी सुख- विलास से बंधे रहने के बजाय हमें आध्यात्मिक जागृति लाने के लिए सद्गुणों का विकास करना चाहिए कि अंत में केवल हमारे कर्म ही हमारे साथ रहेंगे।

पहलकदमी
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com